- **सिंचाई :** खरीफ में वर्षा न होने की दशा में दो सिंचाई की आवश्यकता होती है। पहली सिंचाई खूँटी बनते समय तथा दूसरी सिंचाई मूली बनते समय करनी चाहिए।
- **रोग नियंत्रण :** मूंगफली में क्राउन राट, डाई रूट, बड नेक्रोसिस एवं टिक्का रोग लगता है। इसकी रोकथाम के लिये डाई मेथोएट 30 ई.सी. एक लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।
- **कीट नियंत्रण :** सफेद गिडार, दीमक, हेयरी कैटरपिलर जैसिड एवं फलीवेधक कीट का प्रकोप होता है। इसके नियंत्रण के लिये बेबेरिया वेसियाना एक कि.ग्रा. 200 लीटर पानी में घोल के प्रकोप से पूर्व छिड़काव करना चाहिए।
- **निकाई-गुड़ाई एवं खरपतवार प्रबंधन :** बुआई के 20 दिनों बाद निकाई-गुड़ाई करने से मिट्टी हल्की तथा ढ़ीली हो जाती है तथा खूंट (पेग) आसानी से जमीन में प्रवेश कर जाते हैं और फलियों का विकास अच्छा होता है। अन्त:कर्षण का कार्य खूंटी (पेग) के मिट्टी में प्रवेश करने के बाद नहीं करना चाहिए।
- **कटनी, दौनी एवं भंडारण :** मूंगफली की पत्तियाँ पीली होकर जब नीचे से सूखने लगती हैं तब मूंगफली की खुदायी करके फलियाँ निकाल लेनी चाहिए। फलियों को 6-7 दिनों तक 40 डिग्री सें. से कम तापमान पर सुखाना चाहिए। भंडारण के दौरान फली छेदक कीट हानि पहुँचाते हैं। इसलिये भंडारण के स्थान पर डाईक्लोरोवास तरल 3 मि.ली. प्रति लीटर पानी के साथ घोल बनाकर पाँच लीटर प्रति 100 वर्ग मीटर क्षेत्र में छिड़काव करना चाहिए। फिर फलियों को साफ बोरों में भरकर लकड़ी के तख्तियों के ऊपर रखना चाहिए।

Printed at Vidya Printers, Patna # 9234849923 E-mail : vidyaprintersjp@gmail.com

श्री नरेन्द्र सिंह
मा० कृषि मंत्री, बिहार

बिहार सरकार

कृषि विभाग

श्री जीतन राम मांझी
मा० मुख्यमंत्री, बिहार

किसान जागरूकता महाअभियान-सह-रबी महोत्सव 2014

मूंगफली की उन्नत खेती

बिहार कृषि प्रबंधन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान (बामेती)
पोस्ट: बिहार वेटनरी कॉलेज, जगदेव पथ, पटना – 800 014
Website: www.bameti.org, e-mail : bameti.bihar@gmail.com

मूंगफली की उन्नत खेती

परिचय :

मूंगफली खरीफ मौसम की मुख्य तेलहनी फसल है। मूंगफली की खेती से मृदा की उर्वराशक्ति बढ़ती है। यह वायु तथा वर्षा द्वारा भूमि के कटाव को भी रोकता है।

- **भूमि का चुनाव :** हल्की बलुई मिट्टी जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो मूंगफली की खेती के लिए उपयुक्त होती है।
- **खेत की तैयारी :** खेत की तैयारी हेतु दो-तीन बार जुताई करके पाटा चला कर खेत समतल कर दें। अंतिम जुताई के समय गोबर की सड़ी हुई खाद को मिट्टी में अच्छी तरह मिला देना चाहिए।
- **अनुशंसित प्रभेद :**

उन्नत प्रभेद	बुआई का समय	परिपक्वता अवधि (दिन)	औसत उपज (क्वि०/हे०)	तेल की मात्रा
गुच्छेदार :				
ए.के. 12-24	15 जून-10 जुलाई	100-105	14-16	49 प्रतिशत
कुबेर	15 जून-10 जुलाई	100-105	15-17	48 प्रतिशत
फूले प्रगति	15 जून-10 जुलाई	90-100	18-20	50 प्रतिशत
फैलने वाली :				
एम-13		130-135	25-28	49 प्रतिशत

- **बीज दर :** 80-90 कि.ग्रा. (दाना)/हे. (गुच्छेदार प्रभेदों के लिये), 70-75 कि.ग्रा. (दाना)/हे. (फैलने वाली प्रभेदों के लिये)।

- **बीजोपचार :** बीज जनित रोगों एवं कीटों से फसल को बचाने के लिये फफूंदनाशक एवं कीटनाशक दवाओं से बीजों को उपचारित करना जरूरी है। बुआई से पहले बीज को वेबिस्टीन 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें। यदि खेत में दीमक या तना छेदक का प्रकोप होता है तो फफूंदनाशक से उपचारित करने के बाद बीज को क्लोरोपाईरिफॉस 20 ई.सी. 3 मि. ली. प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए।
- **बुआई की दूरी :** पंक्ति-से-पंक्ति 30 सें.मी. तथा पौधे-से-पौधे की दूरी 15 सें.मी. फैलने वाली प्रभेदों के लिये। पंक्ति-से-पंक्ति 30 सें.मी. तथा पौधे-से-पौधे की दूरी 10 सें.मी. गुच्छेदार प्रभेदों के लिये।
- **खाद एवं उर्वरक प्रबंधन :** नेत्रजन, स्फुर एवं पोटाश की मात्रा में नेत्रजन 25 किलोग्राम (यूरिया 54 कि.ग्रा.), स्फुर 50 कि.ग्रा. (सिंगल सुपर फॉस्फेट 312 कि.ग्रा.) तथा पोटाश 25 किलोग्राम (म्यूरेट ऑफ पोटाश 42 कि.ग्रा./हे.) का व्यवहार करें। उर्वरकों की पूरी मात्रा बुआई के पूर्व अंतिम जुताई के समय एक समान रूप से खेत में मिला दें। जस्ता की कमी वाले खेत में 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट तथा गंधक की कमी वाले खेत में 20 किलोग्राम गंधक डालें। ह्युमिक एसिड 90% 1 कि.ग्रा. प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करना चाहिए।